सहसंपादिका की कलम से.....

"न कोई सम्मेलन न कोई धन का अपव्यय" के संदेश के साथ **'प्रयास' रिश्तों को जोड़ने का... द्वितीय अंक** का प्रकाशन किया गया। हमारी भावना के अनुरूप पत्रिका के प्रकाशन के तत्काल पश्चात इसे प्रत्याशियों के अभिभावकों तक पहुँचा दिया गया। "प्रयास" पत्रिका के इस समय प्रकाशन का उद्देश्य विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी व मेलजोल के लिए समुचित समय उपलब्ध कराना था। इस हेतु हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधियों ने पिछले कई महीनों से पूरी निष्ठा से बायोडाटा के संकलन का कार्य संपन्न किया। सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भी हमारे प्रतिनिधि लगातार सक्रिय रहे, जिन्होंने व्यक्तिगत रुचि लेकर अपना बहुमूल्य समय देते हुए समय पर बायोडाटा कार्यालय तक पहुंचाने का कार्य किया। उनकी तत्परता और सक्रिय सहयोग की वजह से ही आज हम प्रयास पत्रिका को निर्धारित समय पर अभिभावकों को पहुँचाने में सक्षम हो सके। उनके श्रम के लिए "गोलालारीय दर्शन" परिवार सदैव उनका आभारी व उनके कार्य की सराहना करता रहेगा।

"प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का" पत्रिका के प्रकाशन से देशभर के समाजजनों को अपने विवाह योग्य पुत्र पुत्रियों के संबंध करने के लिए एक बड़ा माध्यम मिला है। इस हेतु विवाह संबंधों को तय करने के लिये लोगों का उत्साह देखकर यह सिद्ध होता है कि आज के टेक्नोलॉजी प्रिय लोगों के बीच भी यह पारम्परिक माध्यम अभी भी लोकप्रिय है और यही हमारी सफलता का प्रमाण है। ऑनलाइन वैवाहिक वेबसाइट्स और इंटरनेट के विस्तार के बावजूद भी सामान्य वर्ग में इसकी विश्वसनीयता उतनी नहीं हो पाई है। लोग आज भी वैवाहिक संबंधों के लिए पारम्परिक मेलजोल और पत्रिकाओं के आदान प्रदान द्वारा संपर्क करने में ज्यादा भरोसा करते हैं। हमने इसी भावना को ध्यान में रख कर "प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का" पत्रिका के प्रकाशन का बीड़ा उठाया था। प्रसन्नता का विषय है कि 531 अभिभावकों ने हमारे इस प्रयास का स्वागत कर अपने बच्चों के बायोडाटा इसमें प्रकाशित करने हेतु हमें प्रेषित किये।

शहरों से मिले बायोडाटा की संख्या काफी हद तक संतोषजनक है किन्तु ग्रामीण और सुदूरवर्ती क्षेत्रों में अभी और प्रचार प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है। हमारे क्षेत्रीय संवाददाताओं के साथ अभिभावकों को भी और सक्रिय होना जरुरी है क्योंकि कई विवाह योग्य प्रत्याशी इन क्षेत्रों से आज भी हैं, जो जानकारी के अभाव में वे अलग थलग पड़े हैं और संबंध होने में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हमारा अगला लक्ष्य सुदूरवर्ती प्रत्याशियों को "प्रयास" से जोड़ना है, इस हेतु हमें एक सक्रिय, समर्पित और जुझारु समाजसेवियों के साथ उन अभिभावकों की भी जरुरत है, जो अपने बच्चों के लिए योग्य प्रत्याशियों के लिये सहज साधन (विवाह पत्रिका में बायोडाटा प्रकाशित करवाकर) अपनाकर अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने में सबकी मदद करें ताकि विवाह संबंधों की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सके।

इसके साथ ही आर्थिक रूप से सक्षम समाज जनों को भी इस सामाजिक कार्य में आर्थिक सहायता देने हेतु आगे आने की बहुत जरुरत है। वे अपने प्रतिष्ठानों एवं जन्मदिन, विवाह अवसरों आदि का विज्ञापन देकर गोलालारीय दर्शन व प्रयास पत्रिका को आर्थिक सहयोग प्रदान कर इसके नियमित प्रकाशन में अपनी महती भूमिका निभा सकते है। धनाभाव में कोई भी परमार्थ का कार्य अधिक समय तक आगे नहीं बढ़ता है। समाज के संपन्न महानुभावों से सदैव आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है। समाजसेवा की इस छोटी सी पहल को वृहद रुप देने के लिए आइये हम सब कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें।

- अनुपमा जैन, सहसंपादिका

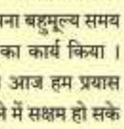

1. 001
2. **सुयश कैलाश जैन**
3. वैद्य/सिंघई
4. 05.06.92
5. 13.30
6. सुंगेली (छ.ग.)
7. बी.ई. (कम्प्यूट साइंस)
8. 5'5"/58 कि.
9. गोरा
10. व्यापार
11. 6 अंको में
12. हाँ
13. हाँ
14. पी-28, जैन मंदिर के पास क्रांति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)
15. 9893789444 9827467333

1. 002
2. **जयति डॉ. प्रमोद जैन**
3. फलौदा/सोनव्यारे
4. 01.01.92
5. 20.32
6. झांसी
7. एम.फार्मा
8. 5'2"/ 56 कि.
9. गोरा
10. -
11. -
12. -
13. नहीं
14. पारस हास्पिटल, बस स्टैण्ड रानीपुर, झांसी
15. 9451333504 9452119406

सोनागिरी में राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड में प्रतिभाओं का हुआ आत्मीय सम्मान

राजेश जैन, झांसी। आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री क्षमासागरजी की प्रेरणा से आयोजित राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड 2017 (प्रतिभा सम्मान) समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से आये होनहार जैन प्रतिभाओं का आत्मीय सम्मान मुख्य अतिथि राजस्थान महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध लेखिका, शिक्षाविद् एवं समाजसेविका प्रो. लाड़ कुमारी जैन, जयपुर ने किया। मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरी (जिला दतिया) में मैत्री समूह के तत्वावधान में आयोजित वर्तमान के सर्वाधिक प्रतिष्ठित "अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान" हेतु इस वर्ष देशभर से कोई 1400 प्रतिभाओं की प्रविष्टि प्राप्त हुई थी। इनमें से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली लगभग 150 प्रतिभाओं का सम्मान समारोह में आमंत्रित कर आत्मीयता एवं गरिमा के साथ सम्मानित किया गया। इनमें अधिकांश विद्यार्थी ऐसे है जिन्होंने अपनी बोर्ड क्लास में शत प्रतिशत अंक पाये है। राज्य प्रशासनिक सेवा (पीएससी) परीक्षा में चयनित अनेक मेहनती प्रतिभाओं को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गवा। राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड 2017 का आयोजन 1 एवं 2 अक्टूबर को सोनागिरी में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज के जीवन पर आधारित एक जानकारी पूर्ण प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसकी सराहना सभी ने की।

प्रतिभा सम्मान समारोह के प्रथम दिन को प्रभु स्मरण के साथ उपस्थित लोगों ने प्रभातफेरी के रुप में भक्ति करके अपने दिन की शुरुआत की तत्पश्चात ब्र.संजीव भैया ने लोकप्रिय होती नवीन जैन पद्धति 'अर्हम्' के माध्यम से अवार्डियों और उनके परिजनों को विभिन्न रोगों के उपचार पर केन्द्रित योग कराया, जिसे सभी ने लाभकारी बताया। योग के बाद सभी अवार्डियों को शुद्ध वस्त्रों में सामूहिक अभिषेक, शांतिधारा और पूजन कराई गई।

राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड के दूसरे दिन पूर्वान्ह 10.30 बजे पहले सत्र का शुभारंभ यंग आर्केस्ट्रा, झांसी के मधुर मंगलाचरण, पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी के चित्र के अनावरण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। श्रीमती अर्चना जैन झांसी ने मुनिश्री की एक कविता प्रस्तुत की। इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री के प्रेरक प्रवचन अवार्डियों एवं उनके परिजनों को सुनावा गया। इस प्रसंग पर देश के जाने माने काउंसलर श्री रीतेश जैन, डायरेक्टर टाइम इंस्टीट्यूट, गाजियाबाद ने बच्चों को शानदार और रोचक ढ़ंग से से करियर काउंसलिंग दी तथा अवार्डियों के प्रश्नों के सटीक उत्तर दिये। काउंसलर श्री सिद्धार्थ जैन ने भी अवार्डियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस सत्र का सरस संचालन डॉ. सुमति प्रकाश जैन एवं श्री राजेश बड़कुल, श्रीमती रेशू मुंबई ने किया। प्रतिभाओं के सम्मान का मुख्य आयोजन दोपहर 1.30 बजे से प्रारंभ हुआ। जिसकी भव्यता, अनुशासन, प्रबंध एवं गरिमा देखते ही बनती थी। सम्मान की श्रृखंला में सबसे पहले राज्य प्रशासनिक सेवा में चयनित छात्रों का आत्मीय सम्मान किया गया। इसके बाद कक्षा 12वीं के विज्ञान, कृषि, कला और वाणिज्य संकाय की सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं तथा कक्षा 10वीं में शत प्रतिशत अंकों के साथ अन्य स्वर्णिम अंक पाने वाले अवार्डियों का सम्मान किया गवा।

चयनित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. लाड़कुमारी जैन, जयपुर ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाने के साथ साथ अपने धर्म और संस्कार को न भूले, अपने आप को बहुत प्रतिभाशाली बनाये और अपनी बात को प्रभावशाली ढ़ंग से रखे। महिलाओं के प्रति बरते जाने वाले लिंग भेद, दहेज और कन्या भ्रूण हत्या का पुरजोर विरोध करते हुए आपने कहा कि बेटियों को खूब पढ़ाईये और अपने खिलाफ होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध उन्हें डट कर आवाज उठाने योग्य बनाइए। हमें सबसे पहले बेटियों की बात हर काम छोड़ कर सुनना चाहिए। उपस्थित जनसमुदाय को यंग जैन अवार्ड की रोमांचक यात्रा पर आधारित एक विडियो दिखावा गवा, जिसे अवार्डियों ने बहुत उत्सुकता के साथ देखा। अवार्डियों से जीवन में कभी व्यसन न करने का संकल्प पत्र भी भराया गया। अंत में जब जिनेन्द्र का मधुर समूह गान कराया गया तथा मैत्री समूह के सभी सदस्यों ने सभी अवार्डी, उनके माता-पिता एवं आमंत्रित अतिथियों से मंच से हाथ जोड़कर किसी भी त्रुटि के लिए क्षमायाचना की गयी। अंतिम दिवस सभी सम्मानित प्रतिभाओं एवं उनके परिजनों को 108 मुनिश्री समयसागरजी महाराज के दर्शनार्थ हेतु अशोक नगर ले जाया गया, जहां विद्यार्थियों से मुनिश्री ने आहार ग्रहण किया व दोपहर पश्चात उनसे चर्चा कर आशीर्वाद प्रदान किया।

हमारे गौरव - योगाचार्य डॉ. फूलचन्द्र जी जैन 'योगीराज'

आपका जन्म 30 नवम्बर सन् 1942 को बैदपुर, जतारा, जिला - टीकमगढ़ (म.प्र.) में हुआ। आपने अपनी शिक्षा बी.ए.(एन.डी.), पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन योगा साइंस (सागर विश्वविद्यालय, सागर), शिक्षा विभाग में कार्यरत रहकर भी आप योग संबंधी शिक्षा सतत् प्रदान करते रहे। डिप्लोमा इन योग (अंतराष्ट्रीय विश्वायतन योगाश्रम, कटरा, जम्मू काश्मीर) से की है। योग करना-कराना, कविता पाठ, चिंतन-मनन, साहित्य सृजन में आपकी विशेष रुचि रही। आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा योगाचार्य, योगीराज, मध्यप्रदेश योगकिंग की उपाधि प्रदान की गई।

* आप भारतीय जैन मिलन, छतरपुर(म.प्र.) के अध्यक्ष रहे। * 'आयोग मित्र', म.प्र. मानव अधिकार आयोग से भी आप वर्षों तक जोड़े रहे। आपके परिवार में आपकी धर्मपत्नि-श्रीमती सरोज जैन (गृहिणी धार्मिक महिला) व पुत्र - 1. चि.पवन कुमार जैन, भोपाल आई.टी.एस. 2. चि. लोकेश जैन, भोपाल तथा पुत्रियां - 1. श्रीमती अरुणा डी.के. जैन, जबलपुर 2. डॉ. कल्पना प्रमोद सिंघई, वर्जिनिया, अमेरिका में है।

आप सन् 1950 में योग से जुडे। योग के माध्यम से आपने अनेक मुनिराजों के सानिध्य में योग शिवरों का आयोजन कर योग दीक्षा प्रदान कर स्वस्थ जीवन का गुर सिखाया। योग के माध्यम से ही अनेक मुनिराजों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाया है। 75 वर्ष की आयु में आप आज भी योग शिक्षा देने के लिए सदैव तत्पर है और आज भी योग शिविरों के माध्यम से लोगों को स्वस्थ बनाएं रखने की प्रबल इच्छा आपके मन में है। आप गोलालारीय दर्शन पत्रिका के विशेष सहयोग सदस्य भी है व समय समय पर योग से संबंधित लेखों को भेजकर समाजजनों को इससे लाभांवित करने का सदैव प्रयास करते रहते है।